पद १०५ (राग: देस - ताल: तिलवाडा) पाहिले गडेनो विठुराज बरवा।।ध्रु.।। विटेवरी उभा विठु ठेवि कटीं

कानिं कुंडल शोभे। कासे कसे पीतांबर शोभत हिरवा।।२।।

पाहनिया विदु पंढरपुरिंचा। दास माणिकाचा झाला मगन हे

कर। म्हणे माझ्या भक्तालागीं मज भेंट करवा।।१।। मस्तकीं मुकुट

अरवा।।३।।